कि ऐसे दुर्दिले साधक को मैं ने विद्या क्यों सिखाई. इस लिये उसे विद्या न आई. और ऐसे कहा है कि मनुष कितनाही पराक्रम करे, पर कर्म उस के साथ रहता है; और कितनाही काम अपनी बुद्धि से करे, पर कर्म का लिखाही मिलता है. यह सुनकर, बैताल फिर उसी दरखत पर जा लटका. और राजा भी, उसके पीछेही जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

अठारहवीं कहानी.

बैताल बोला कि ऐ राजा! कुबलपुर(१) नाम एक नगर. वहां के राजा का नाम सुदत्ती.(२) और उस नगर में धनाढ्यी(३) नाम एक सेठ भी रहता था. उस की पुत्री का नाम धनवती था. छोटी उमर में उसकी शादी एक गौरीदत्त नाम बनिये से कर दी. कितने दिनों के पीछे एक लड़की उस के हुई. नाम उस का मोहनी(४) रक्खा. जब वह कई एक बरस की हुई, तब उस का बाप मर गया. और उस बनिये के भाई बंदों ने उस का सरबस खोस लिया. वह लाचार हो, अपनी बेटी का हाथ पकड़, अधेरी रात के समैं, उस घर से निकल, अपने मा बाप के घर को चली.

(१)कुवलयपुर. (२)सुदत्त. (३)धनाढ्य. (४)मोहिनी.

थोडी एक दूर जाकर, राह भूल एक मरघट में जा निकली. वहां एक चोर सूली पर टंगा हुआ था, अचानक इस का हाथ उस के पांव में लगा. वह बोला कि इस समैं मुझे किस्ने दुख दिया. तब यह बोली मैं ने जानकर तुझे दुख नहीं दिया. मेरी तक़सीर मुआफ़ कर. उस ने कहा दुख और सुख कोई किसू को नहीं देता. जैसा बिधाता कर्म में लिख देता है, वैसाही भुगतता है. और जो मनुष कहते हैं यह काम हम ने किया, सो निपट निरबुद्धी हैं. क्योंकि मनुष करम के तागे में बंधे हुए हैं. वह जहां जहां चाहता है, तहां तहां खैंच ले जाता है. बिधाता की बात कुछ समझी नहीं जाती. क्योंकि, मनुष अपने मन में कुछ बिचारते हैं; और वह कुछ और कर देता है.

यह सुन धनवती बोली ऐ पुरुष! तू कौन है? उस ने कहा मैं चोर हूं. तीसरा दिन सूली पर मुझ को हुआ है; और जान नहीं निकलती. यह बोली किस कारन. उस ने कहा कि बिन ब्याहा हूं. अगर तू अपनी कन्या मुझे ब्याह दे, तो करोड़ अशरफ़ी दूं. मशहूर है कि पाप का मूल लोभ; और व्याध का मूल रस; और दुख का मूल नेह. जो इन तीनों को छोड़े, सो सुख से रहे. पर ये हर किसू से छूट नहीं सकते. अंतकाल लालच के मारे, धनवती ने कन्या देने की इच्छा की. और पूछा मैं यह चाहती हूं, कि तेरे पुत्र हो. पर किस तरह से होगा. उसने कहा कि यह जिस समैं जवान होगी, उस ऐयाम में

एक सुन्दर ब्राह्मण को बुलाकर, पांच सौ मुहर दे, उसके पास रखियो. इस तरह से इस के बेटा होगा.

यह सुनके धनवती ने लड़की को सूली के गिर्द चार फेरे दे शादी कर दी. तब चोर ने उससे कहा कि पूरब तरफ़, इंदारे कुए के पास एक बड़ का दरख़्त है. उसके नीचे वे अशरफ़ियां गड़ी हुई हैं. तू जाके ले. यह कहकर उसकी जान निकल गई. वह उधर को चली. और वहां पहुंचकर, उसमें से थोड़ी अशरफ़ियां ले, अपने मा बाप के घर आई. उन से यह वृत्तान्त कह, उनको अपने साथ स्वामी के देश में लाई. फिर एक बड़ी सी हवेली बना उस में रहने लगी; और वह लड़की दिन बदिन बढ़ने.

जब वह जोबनवती हुई, एक दिन सखी को साथ ले, कोठे पर खड़ी, बाट निहार रही थी; कि इसमें एक जवान ब्राह्मण उस गैल में आ निकला. और यह उसे देख काम के बस हो सखी से बोली कि ऐ आली! इस पुरुष को तू मेरी मा के पास ले आ. यह सुन वह ब्राह्मण को उस की मा के पास ले आई. वह उसे देखकर बोली कि हे ब्राह्मण! मेरी बेटी जवान है. जो तू इस के पास रहेगा, तो मैं पुच के निमित्त सौ अशरफ़ी तुझे दूंगी. यह सुनके उस ने कहा मैं रहूंगा.

ये बातें करते थे कि इतने में सांझ हुई. उसे इच्छा भोजन दिया; और उसने ब्यालू किया. मसल मशहूर है कि भोग आठ प्रकार का है; एक सुगंध, दूसरे बनिता, तीसरे बस्त्र, चौथे गीत, पांचवें पान, छठे भोजन, सातवें सेज,

आठवें आभूषण. ये सब वहां मौजूद थे. ग़रज़, जब पहर रात आई, उस ने रंग महल में जा उस के साथ सारी रैन आनंद से काटी. जब भोर हुई, वह अपने घर गया. और यह उठके अपनी सखियों के पास आई. तब उन में से एक ने पूछा कि कहो रात को दोस्त के साथ क्या क्या ख़ुशियां कीं. उस ने कहा जिस वक़्त कि मैं उस के पास जा बैठी थी, मेरे जी में एक धड़का सा मालूम हुआ. जब कि उस ने मुसकुराके मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं उस के बस हो गई; और मुझे कुछ ख़बर न रही कि क्या हुआ. और ऐसे कहा है कि एक नामी, दूसरे सूरमा, तीसरे चतुर, चौथे सरदार, पांचवें सखी, छठे गुनवान, सातवें क्षीरचक्र हो; ऐसे पुरुष को नारी, इस जनम में तो क्या, उस जनम में भी नहीं भूलती.

हासिल यह है, कि उसी रात इसे गर्भ रहा. जब कि दिन पूरे हुए, एक लड़का पैदा हुआ. छठी की रात को उस की मा ने सुपने में देखा कि एक योगी, जिस के सिर पर जटा, माथे पर चांद, उज्जल भभूत मले, धौला जनेऊ पहने, सेत कंवल के आसन पर बैठा, सफ़ेद सांपों की सेली पहने, मुण्डमाल गले में डाले, एक हाथ में खप्पर दूसरे में त्रिशूल लिये हुए, महा भयावनी सूरत बनाये, उस के सोंहीं आ कहने लगा कि कल आधी रात के समय, एक पिटारे में हज़ार मुहर का तोड़ा और इस लड़के को बंदकर राजद्वार पर रख आ.

यह देखतेही उस की आंख खुल गई. और फ़जर

ऊए. अपनी मा के आगे इस ने सब वृत्तान्त कहा. यह सुनके, दूसरे दिन, उस की मा उसी तरह पिटारे में उस लड़के को बंदकर राजा के दरवाज़े पर रख आई. और इधर राजा ने ख़वाब देखा कि दस भुजा, पांच सिर, हर एक सिर में तीन तीन आंखें, और हर एक सिर पर एक एक चांद, दांत बड़े बड़े, त्रिशूल हाथ में लिये, अति डरावनी सूरत इस के सामने आनके बोला कि ऐ राजा! तेरे द्वार पर एक पिटारा रक्खा है. उस में जो लड़का है, उसे तू ले आ. वही तेरा राज रक्खेगा.

यह सुनतेही, राजा की आंख खुल गई. तब रानी से सब अहवाल कहा. फिर वहां से उठ, दरवाज़े पर आ, देखा कि पिटारा धरा है. जोहीं पिटारे को खोलकर देखा तो उस में एक लड़का और हज़ार अशरफ़ी का तोड़ा है. उस लड़के को आप उठा लिया; और द्वारपाल से कहा कि इस तोड़े को उठा ला. फिर महल में जा, लड़के को रानी की गोद में दिया.

इतने में प्रभात ऊआ. राजा ने बाहर आ पंडितों से और ज्योतिषियों से बुलाके पूछा कि कहो इस लड़के में राजलक्षण क्या है? तब उन पंडितों में से एक सामुद्रिक जाननेवाला ब्राह्मण बोला कि महाराज! इस लड़के में तीन लक्षण तो प्रत्यक्ष दीसते हैं; एक तो बड़ी छाती, दूसरे ऊंचा ललाट, तीसरे बड़ा चिहरः. सिवाय इन के, महाराज! बत्तीस लक्षण पुरुष के जो कहे हैं सो सब इस में हैं. इस से निसंदेह रहिये यह राज करेगा. यह सुन,

राजा ने प्रसन्न हो, मोतियों का हार, अपने गले से उतार, उस ब्राह्मण को दिया; और सब ब्राह्मणों को बहुत सा दान दे, हुकम किया कि इस लड़के का नाम रक्खो. तब पंडितों ने कहा महाराज! आप गठजोड़ा बांध बैठिये. महारानी गोद में लड़का ले बैठें. और सब मंगली लोगों को बुलाकर मंगलाचार करवाओ. तब हम शास्त्र की रीत से नाम करन करें.

यह सुन राजा ने दीवान को आज्ञा दी कि जो ये कहें सो करो. दीवान ने लड़के के होने की, उसी वक़्त, नगर में डोंडी ख़ुशी की फिरवा दी. यह सुनके सब मंगलामुखी हाज़िर ऊए. और घर घर से बधाई आने लगी. राजा के मंदिर में आनंद के बाजन बाजने लगे, और मंगलाचार होने. फिर राजा रानी गोद में लड़के को ले चौक में आ बैठे. और ब्राह्मण बेद पढ़ने लगे. उन ब्राह्मणों में से एक ज्योतिषी ने, शुभ घड़ी, लगन, महूरत बिचार, उस लड़के का नाम हरदत्त रक्खा. फिर वह दिन दिन बढ़ने लगा. निदान सो, नौ बरस की उमर में, छः शास्त्र और चौदह विद्या पढ़कर पंडित ऊआ. इस में भगवान का चाहा यों ऊआ कि उस के मा बाप मर गये. वह राजगद्दी पर बैठा, और धर्म राज करने लगा.

कई एक बरष के पीछे, एक दिन वह राजा अपने मन में चिंता करने लगा, कि मैं ने मा बाप के यहां जनम लेके उन के निमित्त क्या किया. मसल है, कि जो दयावंत होते हैं, वे सब पर दया करते हैं; वेही ज्ञानी हैं;

और उन्हीं को बैकुंठ(१) होता है. और जिन का मन शुद्ध नहीं, तिन का दान, पूजा, तप, तीर्थ करना, शास्त्र सुन्ना सब वृथा है. और जो श्रद्धाहीन डिंभ समेत श्राद्ध करते हैं, तिन का निर्फल होता है; और पित्र उनके निरास जाते हैं. यह बात राजा ने सोच समझ कर बिचारी कि अब पितृकर्म किया चाहिये. फिर राजा हरदत्त गया में गया; और जाकर अपने पित्रों के नाम ले फलगू(२) नदी के कनारे पिंड देने लगा, कि उस नदी में से तीनों के हाथ निकले. यह देख अपने जी में घबराया, कि मैं किस के हाथ में दूं; और किस के हाथ में न दूं.

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि ऐ राजा बिक्रम! उन तीनों में से किसे पिंड देना उचित था? तब राजा ने कहा चोर को. फिर बैताल बोला किस कारन. तब कहा उस ने, कि ब्राह्मण का बीज तो मोल लिया गया. और राजा ने हज़ार अशरफ़ी ले के पाला. इसवास्ते उन दोनों को पिंड का अधिकार न हुआ. इतनी बात सुन, फिर बैताल उसी दरख़्त पर जा टंगा और राजा उसे वहां से बांधकर ले चला.

उन्नीसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! चित्रकूट नाम एक नगर है. तहां का रूपदत्त नाम राजा. एक दिन अकेला सवार

(१) वैकुण्ठ. (२) फल्गु.

हो शिकार को गया. सो भूला हुआ एक महाबन में जा निकला. वहां जाके देखता क्या है कि एक बड़ा सा तालाब है. उस में कंवल खिल रहे हैं; और भांति भांति के पंछी कलोल कर रहे हैं; तालाब के चारों ओर, वृक्षों की घनी घनी छांव में ठंढी ठंढी हवा सुगंधों के साथ आ रही है. यह भी धूप का तौंसा हुआ था, घोड़े को एक दरख़्त से बांध, ज़ीनपोश बिछाकर बैठ गया. घड़ी एक बीती थी, कि एक ऋषिकन्या अति सुन्दर जोबनवती वहां पुष्प लेने को आई. उसे फूल तोड़ते हुए देख, राजा अति काम के बस हुआ. जब वह फूल चूंट अपने स्थान को चली, तब राजा बोला कि यह तुम्हारा कैसा आचार है, कि हम तुम्हारे आश्रम में अतिथ आये; और तुम हमारी सेवा न करो.

यह सुनके वह फिर खड़ी हुई. तब राजा ने कहा कि ऐसे कहते हैं, कि उत्तम बरन के घर जो नीच बरन भी अतिथ आवे, तो वह भी पूजनीय है. और चोर हो, या चंडाल शत्रु हो, या पित्रघातक; पर जो वह भी अपने घर आवे, तो उस की भी पूजा करनी उचित है. क्यों कि अतिथ सब का गुरू है. इस तरह से जब राजा ने कहा तब वह खड़ी हुई. फिर तो दोनों आंखें लड़ाने लगे. इस में वह मुनि भी आ पहुंचा. राजा ने उस तपसी को देख नमस्कार किया. और उन्ने अशीरबाद दिया कि चिरंजीव रहो.

इतना कह उस ने राजा से पूछा कि यहां किस कारन